॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रा... संगठन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

200 वीं
सदैव सत्य
महर्षि दयानन्द सरस्वती | जयन्ती 1824-2024

वेदो की ओर लौटो !

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष २४ अंक-१ जनवरी, २०२४

योगिराज महर्षि दयानंद सरस्वती
२०० वे जन्मदिवस पर

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
आर्य समाज परली के सहयोग से

महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी महोत्सव
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन
श्रद्धानन्द गुरुकुल वार्षिकोत्सव एवं
पूज्य सोममुनिजी जन्मशताब्दी समारोह

दि. २,३ व ४ फरवरी २०२४ (शुक्र. शनि. रविवार)

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, नंदागोल मार्ग, परली- वैजनाथ, जि.बीड

प्रिय सज्जनों, सस्नेह नमस्ते !

आप सभी को विदित कराते हुए अत्यधिक हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में तथा आप सभी के सहयोग से महान क्रांति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती द्विजन्मशताब्दी के पावन उपलक्ष्य में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दि. २,३ व ४ फरवरी २०२४ को विविध कार्यक्रमों के साथ समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इसी के साथ श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली वैजनाथ का वार्षिकोत्सव एवं तपोमूर्ति पूज्य सोममुनिजी शताब्दी कार्यक्रम और हैदराबाद स्वतंत्रता सेनानियों व सेवाव्रतियों का सम्मान एवं विविध सम्मेलन, भव्य शोभा यात्रा आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगें।

इस त्रिदिवसीय समारोह में निम्नांकित आर्यनेता, विद्वान तथा आर्य भजनोपदेशिका पधार रहे हैं।

सान्निध्य - पू.स्वामी श्रद्धानंदजी (१०७ वर्षीय समाजसेवी व्यक्तित्व), पू.डॉ.ब्रह्ममुनिजी (कर्मठआर्य मनीषी)

मा.श्री विनयजी आर्य (महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)
मा.श्री.प्रकाशजी आर्य (पूर्व मंत्री, सार्वदेशिक आर्य सभा)
मा.श्री.महेशजी वेलानी (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई)
मा.श्री.सत्यवीरजी शास्त्री (प्रधान, आर्य प्र.सभा, विदर्भ म.प्र.)
मा.पं. श्री. प्रियदत्तजी शास्त्री (वैदिक विद्वान, हैदराबाद),
मा.प्रा.श्री. सोनेरावजी आचार्य (वैदिक विद्वान, पुणे)
मा.पं.श्री.राजवीरजी शास्त्री (वैदिक विद्वान, सोलापूर)

भजन प्रस्तुति- **आचार्या सविता आर्या (वेदरत्ना) एवं ब्रह्मचारिणियाँ**
(पाणिनि प्रभात कन्या गुरुकुल, हैदराबाद)

अतः आप सभी सपरिवार, मित्रजनों सहित इस समारोह में पधार कर कार्यक्रमों की शोभा बढ़ाएं।

विनीत

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज परली वैजनाथ

सूचना - १) पधारनेवालों की भोजन व निवास व्यवस्था की गयी है। आप कब और कितनी संख्या में पधार रहे हैं ? यह सूचित करें।
२) अपने साथ ऋतु अनुकूल ओढ़ना व आवश्यक वस्त्र लायें। कीमती वस्तुएं व सामान न लायें।

✻ संपर्क ✻

राजेन्द्र दिवे	डॉ.नयनकुमार आचार्य	रंगनाथ तिवार	आचार्य सत्येन्द्रजी
(मंत्री, म.आ.प्र.सभा)	(वेदप्रचार अधिष्ठाता, म.आ.प्र.सभा)	(व्यवस्थापक, म.आ.प्र.सभा)	(प्रधानाचार्य, गुरुकुल परली)
9822366272	9420330178	9423472792	9158445280

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२४ कलि संवत् ५१२४ विक्रम संवत् २०८०

दयानन्दाब्द १९९ मार्गशीर्ष/पौष जनवरी २०२४

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे (९८२२३६५२७२)	**डॉ.ब्रह्ममुनि**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य** (९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक: **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

लेख/समाचार भेजने हेतु – ई-मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४
२) जन-जन के श्रीराम! (सम्पादकीयम्)........ ०५
३) मानवता के प्रहरी म.दयानन्द................ ०७
४) यज्ञमय शतायुषी जीवन-पू.सोममुनिजी १०
५) वैदिक संस्कार व्याख्यान-अभियान १२
६) समाचार दर्पण १६

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) दिव्यज्ञानज्योती-म.दयानंद ! २०
३) विश्ववंद्य श्रीराम!........................ २२
४) राज्यस्तरीय श्रावणी वृत्तांत(उर्वरित)........ २५
६) वार्ताविशेष २७
७) शोकवार्ता २९

※ प्रकाशक ※
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ-४३१५१५

※ मुद्रक ※
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रू.१००/-
आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

हमारा मन शिवसंकल्पवाला हो!

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

(ऋवेद-३४/१)

पदार्थान्वय- हे जगदीश्वर वा राजन्! आपकी कृपा से **(यत्)** जो **(दैवम्)** आत्मा में रहने वा जीवात्मा का साधन **(दूरङ्गमम्)** दूर जाने, मनुष्य को दूर तक ले जाने वा अनेक पदार्थों का ग्रहण करनेवाला **(ज्योतिषाम्)** शब्द आदि विषयों के प्रकाशन श्रोत्र आदि इन्द्रियों को **(ज्योतिः)** प्रवृत्त करनेहारा**(एकम्)** एक **(जाग्रतः)** जागृत अवस्था में **(दूरम्)** दूर **(उत्, ऐति)** भागता है**(उ)** और **(तत्)** जो **(सुप्तस्य)** सोते हुए का **(तथा, एव)** उसी प्रकार **(एति)** भीतर अन्तःकरण में जाता है, **(तत्)** वह **(मे)** मेरा **(मनः)** संकल्प-विकल्पात्मक मन **(शिवसंकल्पम्)** कल्याणकारी धर्मविषयक इच्छावाला **(अस्तु)** हो।

भावार्थ-जो मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा का सेवन और विद्वानों का सङ्ग करके अनेकविध सामर्थ्ययुक्त मन को शुद्ध करते हैं, जो जागृतावस्था में विस्मृत व्यवहारवाला वही मन सुषुप्ति अवस्था में शान्त होता है। जो वेगवाले पदार्थों में अतिवेगवान् ज्ञान के साधन होने से इन्द्रियों के प्रवर्त्तक मन को वश में करते हैं, वे अशुभ व्यवहार को छोड शुभ व्यवहार में मन को प्रवृत्त कर सकते हैं।

(म.दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य से साभार)

स्वतन्त्र भारत देश के ७५ वें

गणतन्त्र दिवस

की सभी देशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं...!

शुभेच्छुक - महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादकीयम्...

जन-जन के श्रीराम..!

भारतवर्ष यह पावन धरती जहां वैदिक ज्ञानतत्वों की प्रवाहिका है, वहीं वह दिव्य नररत्नों की जननी भी है। इसी धरापर उत्पन्न मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम एक ऐसे महान व्यक्तित्व हैं, जिनकी उज्ज्वल चरित्ररूप ज्योतिपुंज आभा सहस्त्रों वर्षों से विश्व के नभोमंडल में निरंतर दैदीप्यमान है। इनकी पावन जीवनकथा ने हर एक मानव को इतना प्रभावित किया कि सामान्यजन भावनाओं के चलते इन्हें महापुरुष के बजाय अवतारी देव या ईश्वर ही बना बैठे। इसी का परिणाम है सर्वत्र राममन्दिरों की स्थापना!

ऐतिहासिक सत्य है कि विदेशी आक्रांताओं ने विशेषकर मुगल सम्राटों ने इस देशपर आक्रमण कर यहां के हिंदुओं पर अनगिनत अत्याचार किये, देश को लूटा और मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवाईं। राम मंदिर के स्थान पर बाबरी मस्जिद बनाना अत्याचार की सीमा को लांघना था और बहुसंख्यक हिंदुओं की अस्मिता को ठेस पहुंचाना था। इसलिए इस ऐतिहासिक गलती को स्वीकार व सुधार कर वहां पुनरपि मंदिर स्थापित करना न्यायोचित होने के साथ ही लाखो हिंदुओं की भावनाओं का सम्मान भी करना था। लेकिन राजनीतिक स्वार्थ व संकीर्णता के चलते ऐसा नहीं हुआ! तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की चादर ओढ़ी राजकीय व्यवस्था को यह मान्य नहीं था। श्रीराम के अनुयायी इस मंदिर के पुनर्निर्माण की प्रतीक्षा में थे, जोकि सैकड़ों वर्षों के बाद पूर्ण हुई। वस्तुतः श्रीराम मंदिर कब का बनना चाहिए था! यदि बुद्धिजीवी मुस्लिम नेता या कांग्रेससहित अन्य राजनीतिक पार्टियां इसके लिए विधायक कदम उठाती, तो राममंदिर राजनीति का विषय ही न बनता!

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम तो सभी के हैं, वे न सिर्फ हिंदू जाति या केवल भारतवर्ष के! वे तो विश्वमानस के लिए आदर्शों के प्रतीक हैं! सभी मनुष्यकृत मत-पंथों, जाति व देशविशेष की भेदभावनाओं से ऊपर उठकर सारे संसार के आदर्श प्रेरणास्रोत हैं! उनके विमल जीवनचरित्र को संकुचितता के दायरे में बांधना या उन्हें राजनीति का विषय बनाना, वह तो उनकी तेजोमय महत्ता को कम करना है।

अयोध्या में राममंदिर तो बन गया,

पौराणिक जगत की यह मांग पूर्ण हो गई। सामान्य लोग भी संतुष्ट हो गए। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि, जन-जन के मन में रामचरित्र कब स्थापित होगा और रामराज्य का उदयन कब होगा? सही रामभक्ति तो उनके मंगलमय पदचिह्नों पर चलने में है। मंदिर में श्री राम की जडमूर्ति स्थापित कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करना वेदादि शास्त्रसंमत नहीं है। इससे तो अंधविश्वास एवं पाखंड का बाजार तेज होता रहेगा। महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज तो श्रीराम जैसे महापुरुषों के उज्ज्वल, उच्चतम चरित्र की स्थापना के पक्ष में है। विश्व के हर मानव के हृदय मंदिर में उस महापुरुष के आदर्श से परिपूर्ण चरित्र की स्थापना चाहता है। क्योंकि दशरथनंदन प्रभु श्रीराम वेदप्रतिपादित सत्यतत्वों के अनुचर थे। महर्षि वाल्मीकि के शब्दों में ही कहा जाए, तो श्रीराम बलवान, धैर्यवान, जितेंद्रिय, बुद्धिमान, प्रिय वक्ता, शत्रु संहारक, धर्मज्ञ, मनसा-वाचा-कर्मणा प्रखर सत्यनिष्ठ, प्राणिमात्र की सेवा में तत्पर, वेदों की ज्ञाता, धनुर्वेद में कुशल, आर्यप्रवर, गंभीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के सदृश, शूर पराक्रमी, क्रोध में कालाग्नि के समान, क्षमा में पृथ्वी के समान, दान करने में कुबेर और सत्य बोलने में दूसरे धर्म के रुप ही थे। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण सत्य व आर्य मर्यादाओं के साथ बिता। वे एक ही निराकार ईश्वर के सच्चे भक्त व उपासक थे। प्रातः-सायं संध्योपासना एवं यज्ञ करते थे। वे किसी शिवमूर्ति अथवा प्रतिमा की पूजक नहीं थे। आर्य समाज ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के उच्चादर्शों की स्थापना करना चाहता है। महर्षि दयानंद जब महाराष्ट्र के नासिक स्थित कालाराम मंदिर पहुंचे, तो उन्होंने अपने प्रवचन में स्पष्टरूप से कहा कि 'रामचंद्र के वनवास काल में पंचवटी में निवास करने के बावजूद इस तीर्थ स्थल मानने की कोई आवश्यकता नहीं है!'

आर्य समाज विशुद्ध वैदिक मान्यताओं के आधार पर तर्क व बुद्धिसंगत दृष्टि से धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक घटनाचक्रों व महापुरुषों के जीवन की योग्यतम समीक्षा करता है। भावनाओं के बहाव में आकर सामूहिक आस्थाओं को देख अंधानुकरण करना इसे स्वीकार नहीं है। आज के युग में श्रीराम सहित सभी महापुरुषों के पावन जीवन को हर जन-जन के हृदय में स्थापित करने लिए आर्यों को निरन्तर कटिबद्ध रहना है।

– डॉ.नयनकुमार आचार्य

- द्विजन्मशताब्दी पर विशेष -

मानवता के प्रहरी महर्षि दयानन्द

- प्रा.डॉ.नरेंद्र शिन्दे(शास्त्री)

उन्नीसवी शताब्दी के महान् युगपुरुष तथा समग्र क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द का इस वर्ष सर्वत्र द्विजन्मशताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा है। परली में महाराष्ट्र सभा द्वारा दि.२, ३, ४ फरवरी २०२४ को यह प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन एवं अन्य कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हो रहे है। यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है।

महर्षि का इस धरती पर आगमन विशेष ईश्वरीय कार्य के लिए हुआ। सहस्रों वर्षों से अन्धःकार की खाई में पतित मानव जाति को वेदज्ञान का अमृत पिलाकर उन्होंने उसे नवप्रकाश में लाया और मनुष्यवत् जीने का अधिकार प्रदान किया। महाभारत के पश्चात् इस धरा पर देवताओं व अध्यात्म के नाम पर बढते पाखण्डों के कारण बनी दुरावस्था को समाप्त कर एक ईश्वर, एक उपासना पद्धति, एक ही मानव धर्म तथा विशुद्ध अध्यात्म की सुव्यवस्था स्थापित की। स्वामीजीने अपनी विचारधारा का मूलाधार वेद का विशुद्ध ज्ञान रखा। एक दृष्टि से यह वेदों का पुनरुद्धार रहा।

वेदों का नाम लेकर तथाकथित पण्डितों ने जो अनिष्ट परम्पराएं चलाई थी और सामान्य लोगों को भ्रमजाल में फंसाया था, उसे स्वामीजीने अपने तर्कनिष्ठ विशुद्ध वेदभाष्य के माध्यम से रोक दिया और सही अर्थों में शाश्वत सुख, शान्ति व आनन्द की गङ्गा प्रवाहित की। वेदज्ञान किसी एक व्यक्तिसमूह या देशविशेष के लिए नहीं, बल्कि समग्र मानवजाति, प्राणिसमूह व सारे संसार के लिए खुली अमूल्य अनुपमेय ज्ञानराशी है, स्वामीजी ने यह सप्रमाण घोषित किया।

स्वामीजी के विमल जीवन व प्रेरक कार्य का अन्तिमतः प्रमुख उद्देश्य ही मानवता रहा है। उनकी साहित्य सम्पदा में भी मनुष्यता ही दृष्टिगोचर होती है। इसीलिए स्वामीजी हमें प्रहरी नजर आते हैं। स्वामीजी ने अपने सम्बोधन में भी हे 'मानवों, आर्यों, आर्य पुत्रों...!' ऐसे ही शब्दों का प्रयोग किया है। इसलिए तो महर्षि दयानन्द सही अर्थों में मानवता के दीपस्तम्भ, मानवहितैषी,म नवीय मूल्यों के संवाहक

रहे। उनकी इसी विशेष पहचान को हमें सदैव बनाये रखना है। किसी पंथ या देश विशेष के लिए ही स्वामीजी को जोडना यह उनकी महत्ता को कम करने जैसा होगा। उनके विश्वहितकारी कार्यों को देखते हुए उन्हें संसार के सारे देशों व समग्र मानवजाति के सर्वंकष कल्याणहितैषी मानना ही समुचित होगा।

स्वामीजी के अमरग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' ने सच में सभी को मानवता का सन्देश देते हुए सत्य ज्ञान को प्रकाश में लाया। इस सत्यार्थ से अनेकों की जीवनज्योति प्रज्वलित हुअी। मुझे मेरे जीवन का एक प्रसंग स्मृतिपटल पर अंकित है। सत्यार्थ प्रकाश यह महान ज्ञानग्रन्थ मेरे पिताजी श्री धोंडिरामजी शिंदे के हाथ में पडा। इसका स्वाध्याय करके एवं आर्य प्रचारकों के व्याखान सुनकर पिताजी ने आर्य समाज के मानवतावादी विचारों को अपनाना आरंभ किया और इ.स.१९८४ में मध्यप्रदेश में स्थित आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश दिलाने के लिए मुझे अपने साथ ले गए। गुरुकुल में हमें सर्वप्रथम आचार्य श्री अमृतलालजी के दर्शन हुए। आचार्य जी महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त हैं। इन्ही आचार्यजी के सान्निध्य में स्वामी दयानंद सरस्वती के बारे में जानने का सुअवसर मिला। उसी गुरुकुल के दूसरे आचार्य श्री जगद्देवजी नैष्ठिक (वर्तमान में स्वामी ऋतपस्पति परिव्राजक) जो मानवता के प्रतिरुप हैं। इन्ही आचार्यों के चरणों में बैठकर हर वह सिद्धांत सीखने को मिला, जिसे स्वामी दयानंद जी महाराज ने अपने ग्रन्थों में मानव कल्याणार्थ समुपस्थित किया है। आचार्य जी ने गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों के लिए महर्षिकृत 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' के ५ रत्न प्रतिदिन स्मरण करने का नियम बनाया। जिससे सभी छात्रों को वैदिक सिद्धांतो का परिचय हुआ। आचार्य श्री हमेशा से यह मानना रहा कि प्रत्येक आर्य को आर्योद्देश्यरत्नमाला अवश्य पढनी चाहिए एवं स्मरण करनी चाहिए।

अपने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में उन सभी विषयों की चर्चा की है, जिनकी आवश्यकता मनुष्यमात्र को हैं। मनुष्य को मनुष्य बनाने का उपाय ऋषिवर ने रखा है, वह इसत तरह हैं –

* **मनुष्य किसे कहना चाहिए ?** – मनुष्य उसे कहना चाहिए, जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख, हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरें और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। (सत्यार्थप्रकाश)

*** मनुष्य का शरीर पाकर क्या करना उचित है? -** मनुष्य शरीर पाकर उत्साह, पुरुषार्थ, सत्पुरुषों का संग और योगाभ्यास का अनुष्ठान करते हुए मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि तथा शरीर, आत्मा और समाज की उन्नति करना कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

*** मनुष्य जीवन कैसा है ?-** यह अतिदुर्लभ मनुष्य जीवन धर्म के सेवन ओर अधर्म के छोडने,परमात्मा की भक्ति और परमानन्द के भोगने के लिए है।

*** कौन मनुष्य महान है?-** वेही मनुष्य महाशय होते हैं, जो पाप कर्मों और दूसरों को पीडा देने के कार्यों को छोडकर, सब प्राणियों के साथ अपनी आत्मा के समान व्यवहार करते हैं और सब के सुख के लिए अपने शरीर वाणी और आत्मा को लगा देते है। (ऋग्वेद भाष्य)

*** मनुष्य कैसे बढते है? -**

यथोदकेन नद्यः समुद्राश्च वर्धन्ते, तथैव धर्मयुक्तेन पुरुषार्थेन मनुष्याः वर्धन्ते।

भावार्थ-जैसे जल से नदियाँ और समुद्र बढते हैं वैसे ही धर्मयुक्त पुरुषार्थ से मनुष्य सदा बढते है।

*** मनुष्यों का व्यवहार कैसा हो?-** यही धर्मानुकूल व्यवहार है कि जैसी अपनी इच्छा हो, वैसी ही दूसरों की भी समझें। जैसे सब प्राणी दुःख की इच्छा नहीं करते और सुख की अभिलाषा करते है, वैसे ही दूसरों के लिए भी सब को वर्तना चाहिए।

*** स्वर्ग एवं नर्क में अन्तर क्या है?-** सुख विशेष ही स्वर्ग है और विषय-तृष्णा में फंसकर दुःख विशेष का भोग करना ही नर्क कहलाता हैं।

*** आनन्द प्राप्ति का उपाय-** जो पुरुष विद्वान्, ज्ञानी, धार्मिक, सत्पुरुषों का संगी,योगी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय और सुशील होता है वही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और परजन्म में आनन्द में रहता है।

इस प्रकार स्वामीजी ने मानवमात्र के कल्याण हेतु सदा ही लेखन किया। 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।' हे मनुष्य! तू मनुष्य बन तथा मानवता का निर्माण कर। इस वेद ऋचा को समक्ष रखकर संपूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने हेतु आर्य समाज की स्थापना की। आज समाज का विशाल वटवृक्ष देश-विदेश में फैला है। आओ हम इस वटवृक्ष को अपनी कर्तव्य निष्ठा से सींचें।

***

(लेखक आर्य समाज उदगीर मंत्री तथा स्थानीय शिवाजी महाविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक हैं।)

- सन्मित्र कॉलनी, देगलूर रोड, उदगीर

(मो.९४०५८५१५४४)

यज्ञमय शतायुषी जीवन - पू.सोममुनिजी

- प्रा.डॉ.वीरेन्द्रकुमार शास्त्री

संसार में कुछ असाधारण व्यक्तित्त्व के धनी लोग होते है, जो अपने कृतित्व एवं व्यक्तित्व से औरों को प्रभावित करते हैं। इसी श्रृंखला में पूज्य सोममुनिजी का नाम गौरव के साथ सूत्रबद्ध है। वे सीधे-साधे दिव्य आकृति एवं मधुर स्वभाव के व्यक्ति हैं। उनका जन्म माघ वद्य ९ गुरुवार ई.सन १९२७ को माता शिवगंगा एवं पिता शंकर नारायण स्वामी के घर नाशिक के पास भगुर में हुआ। माता-पिता ने पुत्र का नाम 'सोमनाथ' रखा। अल्पकाल में ही पिता का प्रेमछत्र छिन्न गया अर्थात् ढाई वर्ष की अवस्था में ही पिताजी का देहावसान हो गया।

बार्शी में उनके एक मामाजी रहते थे। वे उनके पास आ गये। उनके सहयोग से उन्होंने व्यापार करना शुरु किया। हाथगाडी चलाते-चलाते वे पोथियाँ पढने का भी काम करते थे। वहाँ पर महादेव पखाले के कारण 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' में प्रवेश किया। सात वर्ष संघ का काम किया। संघ कार्य में साथीदार रहे उनके सहयोगी श्री देकवर, खरे, भगत, दीक्षित, रानडे और बाबुराव पवार, श्री लक्ष्मण तात्या आदि थे। इन्होंने भी इनको व्यापार में आर्थिक सहायता की।

तत्पश्चात् लगभग २६ वर्ष की आयु में मुनिजी का विवाह श्री भीमाशंकर जी की सुपुत्री सरस्वती जी से हुआ। विवाह में कोंडाबाई, अन्नपूर्णाबाई एवं मित्रों ने पूरा खर्चा कर इनका विवाह किया। उन दिनों मुनिजी व्यसनों की तरफ जा रहे थे कि सौभाग्य से पूज्य पं.मन्सारामजी आर्य से संघ में ही भेट हुई। पू.पं.मन्सारामजी के अलौकिक गुणों के कारण मुनिजी उनके शिष्यत्व को प्राप्त हुए।

१९८४ में रामलिंग मन्दिर में आचार्य सुभाषजी ने गुरुकुल प्रारम्भ किया। गुरुकुल देखने के लिए मुनिजी एवं इनके परममित्र भगवानरावजी कदम वहां गये। आचार्य के त्यागपूर्ण जीवन को देखकर मुनिजी गुरुकुल में ही रहने लगे। उस समय पं.कैलाशन्द्र शास्त्री, गोविन्दजी शास्त्री एवं विद्यार्थियों में से रवीन्द्र, लक्ष्मीकान्त इत्यादि उस समय

के कर्मठ बच्चों को लेकर गायों के लिए दिनभर चारा भरना, अन्न इकट्ठा करना, दान मांगना आदि कार्य वे करते थे। सारा गुरुकुल इनको माता कहकर बुलाता था। बच्चों को वे नित्य नये ढंग का स्वादिष्ट भोजन बनाते-बनवाते रहते। बीच-बीच में मुनिजी के दोनों पुत्र भी आते रहते थे। पूरा गुरुकुल मुनिजी संभालते थे। सन् १९८६ में गुरुकुल का स्थलांतर हुआ और रामलिंग मंदिर से सभा की अपनी भूमि में गुरुकुल आया। वहाँ नाना प्रकार के कष्ट सहकर उन्होंने गुरुकुल को संवारने का पूरा प्रयत्न किया, किन्तु आचार्यजी के साथ मतभेद होने से गुरुकुल छोड बीड में त्यागमुनि जी के पास बच्चों को संस्कारित करने लगे। आसपास के गांव में प्रचार कार्य लगभग एक वर्ष तक किया। पश्चात् १९९७ में आर्य समाज परली वैजनाथ में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के कर कमलों से वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की। इसके बाद स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल में रहने लगे। यहाँ पर भोजन व्यवस्था एवं वृक्षारोपण का कार्य बडे सुचारु रूप से किया। मेरे(लेखक के) साथ जम्मू भी गये। वहाँ पर लगभग ६ माह तक प्रचार किया। अनेक श्रद्धालुओं के घरों में यज्ञ प्रारम्भ किया। गुरुकुल के लिए दान भी एकत्रित किया। परली गुरुकुल में ही उनकी माता शिवगंगाजी का स्वर्गवास हुआ।पूर्ण वैदिक पद्धति से उनका अन्त्येष्टि संस्कार हुआ।

वेदप्रचार, यज्ञ-प्रचार, वृक्षारोपण इत्यादि अनेक कार्य किये है और आज भी वे उतने ही उत्साह के साथ सभी कार्य करने में तत्पर हैं। इस प्रकार से एक निर्धन, अशिक्षित परिवार में जन्म लेकर भी उत्तम माता के संस्कार एवं योग्य गुरुजनों के सहवास से मुनिजी का जीवन त्यागपूर्ण तो हो ही गया, साथ ही उनके दोनों पुत्र, जो कि बडे धनवान होने के साथ ही उदारमना भी हैं। श्री रमेशजी व श्री उमेशजी यह दोनों भाई गुरुकुल सहायता करने में तत्पर है। निर्धन बालकों को खिलाना,पिलाना एवं पढाना मुनिजी के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। मेरा स्वामी जी के साथ लगभग ३५ वर्ष का सान्निध्य रहा है। इनका जीवन सीधा-साधा एवं सरल है। चारों वेदों का कई बार पारायण कर चुके हैं। आर्य समाज परली का बडा सौभाग्य है कि उनके द्वारा ऐसे त्यागी व सत्यनिष्ठ समर्पित मुनिजी का गौरव हो रहा है। हम सभी आर्य जन उनके प्रति कृतज्ञता समर्पित करते हैं।

-पतंजलि, विद्यानगर, परली-वै.
मो.९७६४३३२११७

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

मानव जीवन निर्माण अभियानान्तर्गत

छात्रों में वैदिक सुसंस्कार एवं सद्विचारों की स्थापना हेतु सुसम्पन्न

- वैदिक संस्कार व्याख्यानमाला -

(दि.[illegible] दिसम्बर २०२४ से ०३ जनवरी २०२४)

[illegible] आयोजित इस वर्ष भी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं वसतिगृह मे ज्ञानरत/अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के नवनिर्माण के उद्देश्य से आयोजित एक मासात्मक **'वैदिक संस्कार व्याख्यानमाला'** उपक्रम यशस्वी हुआ। विद्यार्थियों में वैदिक सुसंस्कारों व उत्तमोत्तम विचारों की स्थापना होकर वे राष्ट्र के सच्चे सदाचार सम्पन्न नागरिक बनें। इसके लिए आयोजित इस व्याख्यानमाला में जगह-जगह पर अत्यधिक प्रतिसाद मिला। विद्वानों के भजनों एवं प्रवचनों को सुनकर छात्रों व शिक्षकों में सकारात्मक परिवर्तन के आसार नजर आये। सभा ने इसके लिए एक प्रचारवाहन की व्यवस्था की थी, जिसमें छात्रोपयोगी वैदिक साहित्य भी रखा गया था। स्थानीय आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं समाजसेवी कार्यकर्ताओं ने इसके लिए काफी सहयोगपूर्ण भूमिका निभायी। विद्वानों, भजनोपदेशकों व व्यवस्थापकों सहीत वाहनचालक को भोजन व निवास की बढिया व्यवस्था की गयी।

प्रभावशाली व्याख्याता -

इस वर्ष वैदिक व्याख्यानमाला अभियान के लिए वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री ओमप्रकाशजी आर्य (टाण्डा, अम्बेडकरनगर, वाराणसी-उ.प्र.) को आमन्त्रित किया था। श्री आर्य ने अपने बहुश्रुत एवं शालीन ओजस्वी उद्बोधन से छात्रों में सकारात्मक ऊर्जा व उत्साह उत्पन्न किया। उनके वैविध्यपूर्ण विषयों की प्रस्तुति से छात्रवर्ग बहुत ही प्रभावित हुआ। कार्यक्रमों की सफलता से मुख्याध्यापक व अध्यापक भी काफी सन्तुष्ट हुए।

कार्यक्रमों की शुरुआत सभा के भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान द्वारा प्रस्तुत 'सरळ मार्ग सोडून माणसा..!' इस उद्बोधक भजन ने छात्रश्रोताओं में बहुत उत्साहपूर्ण वातावरण तैयार किया। सभी विद्यालयों व शैक्षिक संस्थाओं

में इन सभी विद्वानों का सम्मान व अभिनंदन किया। इस अभियान में छात्रोपयोगी साहित्य भी वितरण के लिए रखा गया था, जिसका व्यवस्थापन सभा के युवा वेदप्रचारक श्री अभिषेक शास्त्री ने किया।

समारोह कां आरम्भ माजलगांव से हुआ, जिसमें वैदिक विद्वान पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी ने विचार रखें। जिन-जिन शैक्षणिक संस्थानों वैदिक व्याख्यानमाला उपक्रम का आयोजन हुआ, उनकी सूचि निम्न रूप से हैं-

-वैदिक व्याख्यानमाला-विवरण -

दिनांक	स्कूल / कॉलेज के नाम
०१.१२.२०२३	१) सिद्धेश्वर माध्यमिक विद्यालय, माजलगांव
	२) सिद्धेश्वर प्राथमिक विद्यालय, माजलगांव
	३) सिद्धेश्वर महाविद्यालय, माजलगांव
	४) छत्रपति शिवाजी विद्यालय, माजलगांव
	५) संस्कृत संस्कार केन्द्रम्, परली-वै.
	६) ब्राईट कोचिंग क्लासेस, परली-वै.
०२.१२.२०२३	७) ममता प्रा.व उच्च माध्य. विद्यालय, गंगाखेड
	८) जनाबाई कला, वाणिज्य, विज्ञान महाविद्यालय,गंगाखेड
०३.१२.२०२३	९) सरस्वती विद्यालय, पिंगळी रोड, परभणी
०४.१२.२०२३	१०) भारतीय बाल विद्या मंदिर, परभणी
०५.१२.२०२३	११) सरजुदेवी आर्य कन्या विद्यालय, हिंगोली
०६.१२.२०२३	१२) माध्यमिक विद्यालय, बाभळी जि.यवतमाळ
	१३) यशवंत व दत्तराव माध्य. व उच्च माध्य.विद्यालय शेंबाळ पिंपरी जि.यवतमाळ
०७.१२.२०२३	१४) श्री दत्त प्राथमिक शाळा, तळणी जि.नांदेड
०८.१२.२०२३	१५) श्री गंगाराम पाटील माध्यमिक विद्यालय, निवघा
	१६) राणी लक्ष्मीबाई माध्य.विद्यालय, निवघा
०९.१२.२०२३	१७) विवेकानंद माध्य. व उच्च माध्य. विद्यालय हदगांव
	१८) राणी लक्ष्मीबाई हायस्कुल, हदगांव
१०.१२.२०२३	१९) आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ,भजन,प्रवचन

११.१२.२०२३	२०) सरदार वल्लभभाई पटेल प्रा.विद्यालय, मुदखेड
१२.१२.२०२३	२१) हुतात्मा पानसरे हायस्कुल, धर्माबाद
	२२) गुरुकुल प्रा.व माध्यमिक विद्यालय, धर्माबाद
१३.१२.२०२३	२३) राष्ट्रमाता जिजामाता विद्यालय, धर्माबाद
	२४) औद्योगिक शिक्षण संस्था,धर्माबाद
१४.१२.२०२३	२५) आर्य समाज, दैनिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, धर्माबाद
	२६) विद्यानिकेतन मुलींचे माध्य.व उच्च माध्य.विद्यालय,बिलोली
	२७) जय किसान माध्यमिक विद्यालय, कोल्हे बोरगांव
१५.१२.२०२३	२८) गोगवलकर गुरुजी विद्यालय, देगलुर
	२९) जनजागृती गुरुकुल वसतिगृह, देगलुर
१६.१२.२०२३	३०) जनजागृती गुरुकुल (वसतिगृह), लिंगनकेरुर
१७.१२.२०२३	३१) लिंगनकेरुर विद्यालय (वसतिगृह), लिंगनकेरुर
	३२) आर्य समाज, उदगीर - साप्ताहिक सत्संग
१८.१२.२०२३	३३) राजर्षी शाहू माध्यमिक विद्यालय, उदगीर
	३४) लाल बहादुर माध्यमिक विद्यालय, उदगीर
	३५) सैनिक स्कूल, सीबीएसई, उदगीर
१९.१२.२०२३	३६) जिल्हा परिषद प्रशाला, लोहारा
	३७) गंगामाता कन्या माध्य. व उच्च माध्य. विद्यालय,लोहारा
	३८) मिलिंद विद्यालय, करडखेल
२०.१२.२०२३	३९) जिल्हा परिषद प्राथमिक व माध्य. विद्यालय, साकोळ
	४०) प्रियदर्शिनी माध्य. व उच्च माध्य.विद्यालय, साकोळ
	४१) नूतन माध्य. व उच्च माध्य. विद्यालय, शि.अनंतपाळ
२१.१२.२०२३	४२) डी.के.पाटील इंग्लिश स्कूल, निलंगा
	४३) प्रतिभाताई पवार माध्य. आश्रमशाळा, निलंगा
	४४) दीनदयाळ आश्रम व माध्य. विद्यालय, निलंगा
२२.१२.२०२३	४५) वसंतराव पाटील विद्यानिकेतन विद्यालय, औराद
	४६) पं.वीरभद्रजी आर्य विद्यालय, औराद
	४७) डॉ.शिवाजीराव पाटील माध्य.विद्यालय, औराद

२३.१२.२०२३	४८) जिल्हा परिषद प्रा.कन्या शाळा, कासार शिरसी
२४.१२.२०२३	४९) आर्य समाज में यज्ञ, भजन, प्रवचन उमरगा
	५०) इन्द्रधनु वृद्धाश्रम में भजन व प्रवचन, उमरगा
२५.१२.२०२३	५१) शेंडगे मेडिकल कॉलेज, उमरगा
	५२) शेंडगे इंग्लिश स्कूल, उमरगा
	५३) साई समर्थ कोचिंग क्लासेस, उमरगा
२६.१२.२०२३	५४) श्रीकृष्ण विद्यालय, गुंजोटी ता.उमरगा
२७.१२.२०२३	५५) ग्रामीण प्रशाला, माडज ता.उमरगा
	५६) जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा, माडज ता.उमरगा
२८.१२.२०२३	५७) विवेकानंद विद्यालय व महाविद्यालय, लातूर
	५८) दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर
२९.१२.२०२३	५९) विवेकानंद विद्यालय व महाविद्यालय, लातूर
	६०) यशवंतराव विद्यालय, लातूर
	६१) जिजामाता कन्या विद्यालय, लातूर
३०.१२.२०२३	६२) संत भगवानबाबा विद्यालय, लातूर
	६३) आर्य समाज अंबाजोगाई में सत्संग
	६४) डॉ.सौ.नयन लोमटे(अंबाजोगाई)के घर पारिवारिक सत्संग
३१.१२.२०२३	६५) आर्य समाज, परली में सत्संग व साप्ताहिक यज्ञ
	६६) श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में प्रवचन
०१.०१.२०२४	६७) न्यू हायस्कूल, थर्मल कॉलनी, परली-वै.
	६८) भेल सेकंडरी स्कूल,थर्मल कॉलनी, परली-वै.
	६९) महर्षि कणाद विद्यालय, परली-वै.
०२.०१.२०२४	७०) विद्यावर्धिनी विद्यालय, परली-वै.
	७१) श्री सरस्वती विद्यालय, परली-वै.
	७२) नवीन माध्यमिक विद्यालय, परली-वै.
०३.०१.२०२४	७३) वैद्यनाथ विद्यालय, परली-वै.
	७४) वैद्यनाथ नर्सिंग कॉलेज, परली-वै.
	७५) शारदा विद्या मंदिर, बँक कॉलनी, परली-वै.

समाचार दर्पण

श्रद्धानन्दजी का १०७ वां जन्मदिन सोत्साह

देश के भावी कर्णधारस्वरुप छात्रों को मानवीय मूल्यों तथा सुसंस्कारों संस्कारों से युक्त बनाकर उन्हें भारत का श्रेष्ठ नागरिक बनाने हेतु स्वामीजी

का बहुमूल्य उपदेश देकर उन्हें नेक मानव बनाने के लिए समर्पित तपस्वी व्यक्तित्व पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चंद्र गुरुजी) का १०७ वां जन्मदिवस लातूर में उत्साहपूर्वक मनाया गया। रामनगर आर्य समाज में आयोजित जन्मदिवस समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र सभा के उपप्रधान श्री ओमप्रकाशजी पाराशर ने की। प्रमुख अतिथि के रुप में आर्य विद्वान श्री लक्ष्मण आर्य गुरुजी एवं वैदिक विद्वान प्रा.डॉ.अखिलेशजी शर्मा ने उपस्थित रहकर मार्गदर्शन किया। श्री लक्ष्मण गुरुजी ने बताया कि, स्वामीजी का समग्र जीवन त्याग एवं समर्पण की भावना से ओतप्रोत रहा है। विद्यार्थियों को वैदिक अहर्निश कष्टमय जीवन बिताते रहे। आज भी उनका निष्कलंक जीवन हम सभी के लिए नयी उर्जा एवं प्रेरणा प्रदान करता है। श्री अखिलेश शर्मा ने भी स्वामीजी को एक यशस्वी समाजसुधारक बताया। इस अवसर पर सर्वश्री विज्ञानमुनिजी, जगन्नाथ पाटील, वशिष्ट आर्य, विजयकुमार कानडे, प्रा.शरदचंद्र डुमणे, रोहित जगदाळे, अशोक पवार, डॉ.कोलफुके, सौ.लीलावती जगदाळे, शंकरराव मोरे आदियों ने विचार रखे। प्रास्ताविक सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे व डॉ.नयनकुमार आचार्य ने विषय की भूमिका रखी। सूत्रसंचालन प्रा.सोमदेवजी शिंदे ने किया एवं आभार अनंत लोखंडे ने व्यक्त किये।

विदर्भ में द्विजन्मशताब्दी महोत्सव सम्पन्न

विदर्भ एवं म.प्र.आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में बेलखेड ता.तेल्हारा जि.अकोला में महर्षि दयानन्द सरस्वती का द्विजन्मशताब्दी महोत्सव जिसमें बेलखेड ग्राम के सावित्रीबाई फुले विद्यालय एवं डीएवी विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने आकर्षक झाकियाँ तथा लेझिम नृत्य प्रस्तुत किये।

उत्साहपूर्वक मनाया गया। दि.२३, २४ व २५ दिसम्बर २०२३ को सम्पन्न हुए इस त्रिदिवसीय समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विनयजी आर्य ने प्रमुख मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा- वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द के विचारों की बहुत ही आवश्यकता है। सम्प्रति बढती अनेकों समस्याओं का एकमात्र उपाय है महर्षि के वैदिक विचार! अतः आर्यजनों का कर्तव्य है कि वे विभिन्न माध्यमों से इन विचारों को सामान्य लोगों तक फैलाने हेतु प्रयत्नशील रहें। समारोह के उपलक्ष्य में गाँव में भव्य शोभायात्रा निकाली गयी,

शोभायात्रा में विदर्भ सभांतर्गत आर्य समाजों के आर्य कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। इस अवसर पर बहुकुंडीय यज्ञ का भी आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में वैदिक विद्वान सर्वश्री डॉ.नयनकुमार आचार्य, डॉ.अखिलेशजी शर्मा, भजनोपदेशिका श्रीमती अमृता शास्त्री, पं.सहदेवजी आर्य, महाराष्ट्र सभा के प्रधान योगमुनिजी, पं.कृष्णकुमारजी शास्त्री, प्रा.अनिलजी शर्मा, अशोकजी यादव, घनश्यामदास रेवतानी, शांतीलालजी गोमासे, सुदर्शनदेव आर्य, मयंकजी चतुर्वेदी, सभा के प्रधान पं.सत्येंद्रजी शास्त्री आदियों ने मार्गदर्शन किया।

पिम्परी पुणे का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पिम्परी स्थित आर्य समाज का ७३ वां वार्षिकोत्सव विविध कार्यक्रमों के साथ सोत्साह सम्पन्न हुआ। दि. २२, २३ व २४ दिसम्बर २०२३ इन तीन दिनों के दौरान प्रातः एवं सायं विश्वकल्याण महायज्ञ, भजन, प्रवचन आदि कार्यक्रम हुए। इस समारोह में वैदिक प्रवक्ता एवं भजनोपदेशिका श्रीमती अंजली आर्या(दिल्ली) ने बहुत ही प्रेरणाप्रद भजन प्रस्तुत किये। वैदिक विद्वान प्रा.श्री सोनेरावजी आचार्य ने विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया। अन्तिम दिन स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित रक्तदान यज्ञ में ५७ आर्यजनों ने रक्तदान किया। इसी के साथ ही आर्य समाज के प्रांगण में ५१ कुंडीय यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। उत्सव के उपलक्ष्य में आर्यवीर दल शिविर का भी आयोजन किया गया। इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु आर्य समाज के संरक्षक श्री मुरलीधरजी सुंदरानी, प्रधान सुरेंद्रजी करमचंदानी, मन्त्री हरेशजी त्रिलोकचंदानी एवं अन्य पदाधिकारियों ने प्रयत्न किये। समारोह का संचालन श्रीमती नलिनी देशपांडे, दिगम्बर रिद्दीवाडे, उत्तमराव दण्डिमे, दत्ता सूर्यवंशी, दिनेश यादव आदियों ने किया।

चलो टंकारा! चलो टंकारा!!

महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में ऋषिवर देव दयानन्द की पावन जन्मभूमि टंकारा(गुजरात) में आगामी १०, ११, १२ फरवरी २०२४ को भव्य अन्तर्राष्ट्रीय २००वां जन्मोत्सव व ज्ञानज्योति पर्व-स्मरणोत्सव महासम्मेलन मनाया जा रहा है। इस ऐतिहासिक समारोह में विविध महासम्मेलनों, गुरुकुलों-विद्यालयों के छात्रों की चित्र व नाट्य प्रस्तुतियां, बृहद्यज्ञ आदि कार्यक्रम होंगें। अतः आप भारी संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढावें और समारोह को ऐतिहासिक रुप प्रदान करें। अधिक जानकारी के लिए अपनी सभाओं एवं आर्य समाजों के पदाधिकारियों से सम्पर्क करें।

– सुरेशचन्द्रजी आर्य(प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

||ओ३म्||

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। - मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* मनु उपदेश *

अवैदिक ग्रंथ दुःखप्रद !

या वेदबाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः।
सर्वास्ता निष्फलाः प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः।।

(मनुस्मृती १२/९५)

अर्थ – जे ग्रंथ वेदबाह्य कुत्सित पुरुषांनी बनविले आहेत, ते जगाला दुःखसागरात बुडविणारे आहेत. ते सर्व निष्फळ, असत्य, अंधकाररुप आणि इहलोकी व परलोकी दुःख देणारे आहेत.

* दयानंद वाणी *

मूर्तिपूजा ही पायरी नसून दरी!

ब्रह्मदेवापासून जैमिनी महर्षीपर्यंतच्या विद्वानांचे मत आहे की, जे काही वेदांविरुद्ध असेल, ते मान्य न करणे आणि जे वेदानुकुल असेल, त्याचे आचरण करणे हा खरा धर्म होय. का? कारण वेद हा सत्य अर्थाचा प्रतिपादक आहे. याविरुद्ध जे तंत्रग्रंथ आणि पुराणग्रंथ वेदविरुद्ध आहेत, ते खोटे आहेत. त्यामध्ये सांगितलेली मूर्तिपूजा ही अधर्मरूप आहे. माणसांचे ज्ञान जडाची पूजा केल्याने वाढत नाही. किंबहुना जे काही ज्ञान असते, तेही जड पूजनाने नष्ट होऊन जाते. ज्ञानी लोकांची सेवा आणि सत्संग केल्याने ज्ञान वाढते. पाषाणादिकांच्या मूर्तीची सेवा करून ते वाढत नाही. मूर्तीपूजेने परमेश्वराचे ध्यान करणे मुळीच सुलभ होत नाही. मूर्तिपूजा ही पायरी नसून ती मोठी दरी आहे. माणूस त्यात पडला की, त्याचा चकाचूर होतो. तो त्यातून बाहेर पडू शकत नाही. त्यातच मरून जातो. लहान धार्मिक पंडितांपासून मोठ्या विद्वान योग्यापर्यंत लोकांच्या सत्संगाने, सद्विद्या आणि सत्यभाषण इत्यादी परमेश्वर प्राप्तीच्या पायऱ्या आहेत.

दिव्यज्ञान ज्योतिप्रकाशक - म.दयानंद!

- श्रीमती नलिनी देशपाण्डे (पुणे)

जवळपास साडेपाच हजार वर्षांपासून अज्ञान व अविद्येच्या काळोखात खितपत पडलेल्या निद्रिस्त मानवसमूहाला वेदज्ञानाच्या दिव्य ज्ञानप्रकाशात आणणारे दयानंद सरस्वती म्हणजे घोरतिमिरनाशक क्रांतीदर्शी युगपुरुष होत.

ज्याप्रमाणे समुद्रातील दूर-दूर वर पसरलेली वाळू आपण मोजू शकत नाही. आकाशातील असंख्य तारे आपण मोजू शकत नाही. सूर्याच्या किरणांची आपण गणना करू शकत नाही. तशीच महापुरुषाच्या गुणांची गुणावली ही आपण मोजू शकत नाही. महर्षी दयानंद हे देखील असेच महापुरुष आहेत, त्यांचे चरित्र अतिशय उदात्त व सर्वोच्चस्थानी आहे. स्वामीजींच्या आदर्श जीवनामुळे इतरांच्याही जीवनाचा उद्धार झाला.

महर्षी दयानंदांच्या विशुद्ध वैदिक ज्ञान शिकवणीमुळे सर्वत्र जागृती झाली. घरोघरी यज्ञ होऊ लागले. गुरुकुलीय शिक्षण पद्धती उदयास आली. स्त्री शिक्षणाला प्राधान्य दिले गेले. जीवन हे रिकामटेकडे बसून राहण्यासाठी नाही, तर ते मोठा पुरुषार्थ करून समाज, परिवार व राष्ट्राची सर्वांगीण प्रगती साधण्यासाठी आहे. हे त्यांनी जगाला दाखवून दिले.

स्वामीजींनी हजारो वर्षानंतर पुन्हा एकदा वेदांचा शुद्ध पद्धतीने प्रसार व प्रचार केल्याने वैदिक ज्ञान हे सर्वोच्च आहे, हे साऱ्या जगाला समजले. 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्!' म्हणजेच श्रेष्ठ माणूस बनून त्याने राष्ट्रासाठी दिव्य संतती निर्माण करावी, असाही संदेश त्यांनी दिला. अनेक मंत्रांचे दाखले देऊन त्यांनी व्यक्ती, समाज, राष्ट्र व विश्वाचे कल्याण साधण्याचा प्रयत्न केला. प्रत्येक बाबतीत वेदमंत्रांची प्रमाणे देत त्यांनी शुद्ध स्वरुपातील ईश्वर, धर्म, अध्यात्म, कर्मकांड आणि सामाजिक संरचना प्रतिपादित केली. अज्ञान, अविद्या, अंधविश्वास, रुढी-परंपरा नष्ट करीत वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून वेदज्ञान जगासमोर मांडले.

महर्षी दयानंदांनी माणसां-माणसातील संकीर्ण भेदभाव दूर करीत या जगात माणूस ही एकच श्रेष्ठ जात व मानवता हाच खरा धर्म सांगितला. त्याकाळी अनेक पंथ, संप्रदाय यांचा

बोलबाला होता. प्रत्येक जण 'माझेच खरे' असे ठासून सांगत होता. महर्षी दयानंदांनी सत्याचा अर्थ सांगण्यासाठी **'सत्यार्थ प्रकाश'** नावाचा ग्रंथ लिहिला. यात त्यांनी सत्याची परीक्षा कशी करावी? हे सांगितले. याच श्रेष्ठतम ग्रंथाचे अनेकांनी वाचन करून आपले जीवन उन्नत केले. **'संस्कारविधी'** हा ग्रंथ रचून वैदिक १६ संस्कारांचे विशुद्ध स्वरुप सांगितले. **'गोकरुणानिधी'** सारखा ग्रंथ लिहून त्यात गोमातेचे महत्त्व सांगितले. **'व्यवहारभानू'** नावाचा ग्रंथ प्रदान करून माणसाचा व्यवहार कसा असावा? हे या छोट्याशा ग्रंथात सांगितले.

मानवतेचे व विश्वकल्याणाचे कार्य साधावयाचे असेल तर ते संघटित स्वरुपात अधिक होते. म्हणून स्वामीजींनी आर्य समाजाची स्थापना केली. आर्य समाजाचे १० नियम बनवले आणि जीवनाचा सर्वांगीण विकास करण्यासाठी प्रत्येक माणसाला प्रवृत्त केले. जात-पात, धर्म हे गुण कर्म स्वभावानुसार आहेत. ही शिकवण समाजाला दिली.

महर्षींनी एका समृद्ध कुटुंबामध्ये जन्म घेतला, पण ते जगले त्यागत व तपस्यापूर्वक! सर्वसामान्य लोकांना वेदामृत पाजण्यासाठी जीवनदान दिले. सत्य वैदिक ज्ञानाची दारे सर्वांसाठी खुली केली. अशा या महान ऋषीवर दयानंद सरस्वती यांचे हे २०० वे जयंती वर्ष आहे. आता आपण या द्विजन्मशताब्दीची सांगता करीत आहोत. तसेच आगामी वर्ष हे स्वामीजींनी स्थापन केलेल्या 'आर्य समाज' या जागतिक कल्याणाचा प्रकल्प सोडलेल्या संघटनेचे सार्धशताब्दी वर्ष आहे. या अनुषंगाने गतवर्षी (१२ फेब्रुवारी २०२३) नवी दिल्ली येथे एका भव्य समारंभात पंतप्रधान श्री नरेंद्र मोदी यांनी दोन वर्ष चालणाऱ्या व्यापक कार्य योजनांचे उद्घाटन केले, तर आता १०, १२ व १३ फेब्रुवारी २०२४ ला पुण्यभू टंकारा(गुजरात) येथे 'म.दयानंद जयंती' सोहळा आयोजित करण्यात आला आहे. त्यासोबतच दि.२, ३ व ४ फेब्रुवारीला परळीच्या रम्य गुरुकुल आश्रमात राज्यपातळीवर द्विजन्मशताब्दी महासंमेलन होत आहे. यानिमित्त त्या महापुरुषाच्या श्रेष्ठतम अशा आदर्श जीवन व कार्याला डोळ्यासमोर ठेवून स्वतः आर्य बनू या आणि जगाला आर्य बनवू या! त्यात थोर क्रांतिकारी महर्षींना कृतज्ञतेने शतशः अभिवादन!

(लेखिका आर्य समाजाच्या महिला प्रचारक आहेत)

- साई एव्हेन्यु, रो हाऊस नं.३,
पिंपळे सौदागर, पुणे
मो.९८२२७२८५१६

विश्ववंद्य श्रीराम!

- डॉ.नयनकुमार आचार्य

यावत्स्थास्यन्ति गिरय: सरितश्च महीतले।
तावद्रामायण-कथा लोकेषु प्रचरिष्यति ।।

जोपर्यंत या भूमंडळी पर्वत उभे असतील व नद्या वाहत राहतील, तोपर्यंत रामायणकथा लोकांमध्ये प्रसार होत राहील.

सध्याच्या संक्रमण युगात प्रभू श्रीरामांचे पावन जीवन हेच समग्र विश्वाच्या नवनिर्मितीसाठी सर्वाधिक उपयुक्त ठरणारे आहे. अगदीच बालपणापासून ते जीवनाच्या अंतिम क्षणापर्यंत त्यांच्या जीवनपटावर दृष्टिक्षेप टाकला तर आपणांस असे लक्षात येते की त्यांनी कधीही आपल्या मर्यादा ओलांडल्या नाहीत .त्यांचा ब्रह्मचर्य आश्रमाचा म्हणजेच विद्यार्थीजीवनाचा काळ घ्या की गृहस्थाश्रमाचा! एक राजा या रूपातील प्रशासक म्हणून पाहा की त्याचे इतर कोणतेही रूप डोळ्यासमोर ठेवा ! त्यांच्या सर्वच बाबी उत्तमोत्तम असल्याचे निदर्शनास येते. पितामाता-पुत्र, गुरु - शिष्य, पति-पत्नी, राजा - प्रजा, स्वामी- सेवक, भाऊ -भाऊ... अहो इतकेच काय तर शत्रू-मित्र असे सर्व संबंध किती आदर्शवादी आहे, हे आपणांस त्यांच्या उदात्त जीवनाकडे पाहिल्यावर लक्षात येते. अशा वेगवेगळ्या नात्यांतून अवलोकन केले, तरी ते नेहमीच सर्वोच्चस्थानी दिसून येतात. म्हणून त्यांना प्रदान करण्यात आलेले **'मर्यादापुरुषोत्तम'** हे विशेषण हे केवळ राघवांनाच लागू पडते. श्रीरामांसारखे इतक्या उच्च आदर्शांनी अलंकृत झालेले महान व दिव्य व्यक्तिमत्व समग्र भूमंडळावर आजपर्यंत जन्माला येऊ शकले नाही. जे कोणी आहेत, ते फक्त आणि फक्त श्रीरामच !

श्रीरामांची थोर कीर्ती ही आम्हाला केवळ त्यांच्या आदर्श मातृ-पितृभक्तीतून सर्वात आधी दृष्टीस पडते. आपले पिता दशरथ व तिन्ही मातां समवेत श्रीरामांचा व्यवहार हा अतिशय प्रेमळ, सुस्वभावी आणि एकसमान होता. जेव्हा मंथरा दासीने राणी कैकयीला रामाच्या राज्याभिषेकाची सूचना दिली, तेव्हा अतिशय आनंदित होऊन महाराणी कैकयी म्हणाली-माझ्यासाठी भरत जसा प्रिय, त्याहीपेक्षा मला राम अधिक प्रिय आहे. कारण **'कौशल्यातोऽ तिरिक्तं च स तु शुश्रूषते हि माम्।'** रामाने कौशल्येपेक्षा माझी अधिक सेवा केल्याने तो मला भरतापेक्षाही प्रिय आहे.

रामाचे पितृवात्सल्य केवढे उदार होते पाहा? वनवासाला पाठवण्या साठीची आज्ञा दुःखाने व्याकूळ झालेले राजा दशरथ जड अंतःकरणामुळे देऊ शकत नाहीत की त्यांच्या मुखातून शब्दही बाहेर पडत नाहीत. अशावेळी माता कैकयीने दशरथाची भावना व्यक्त करण्याविषयी रामाला विचारले, तेव्हा रामांनी क्षणाचाही विलंब न लावता जे काही उद्गार काढले, ते पित्याच्या साधनेला शिरोधार्य मानण्याचा परमोच्च आदर्श होता. राम म्हणतात-

अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयमपि पावके।
भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं पतेयमपि चार्णवे ।।
तद् ब्रूहि वचनं देवि राज्ञो यदभिकांक्षितम्।
करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभिभाषते।।

(अयोध्या कांड-१८/२९,३०)

अगं आई ! मी महाराजांच्या आज्ञेने जळत्या आगीत देखील उडी घेऊ शकतो. भयंकर असे विषदेखील प्राशन करू इच्छितो . तसेच समुद्रात देखील उडी घेतो. म्हणूनच सांग आई ! राजे काय म्हणू इच्छितात ? मी त्यांचे वचन पूर्ण करण्याची आताच दृढप्रतिज्ञा करतो. कारण राम हा एकदाच बोलतो, दोन वेळा कधीच बोलत नाही. जे काही म्हणतो, त्याला पूर्ण करूनच टाकतो. पितृभक्तीचा किती मोठा उच्च आदर्श आहे हा ! वडिलांच्या आज्ञेपोटी स्वतःला संपवणारा पुत्र आज शोधुनही सापडणार नाही. इतकेच काय जेव्हा कैकयीने रामाच्या वनवासाची गोष्ट बोलून दाखविली, तेव्हा रामाची अवस्था एखाद्या महान स्थितप्रज्ञासारखी होती, हे सांगताना महर्षी वाल्मिकी स्वतःहून म्हणतात -

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।।

राज्याभिषेकास बोलावले असता व वनाला जाण्याकरिता निरोप पाठविला असता(या दोन्ही अनुकूल किंवा प्रतिकूल प्रसंगी) रामचंद्रांच्या चेहऱ्यावर मी थोडाही वेगळेपणा भासला नाही. राज्यप्राप्तीचा आनंद किंवा वनगमनाचे दुःख याबाबत निराशेची छोटी लकेर सुद्धा चेहऱ्यावर दिसली नाही. दोन्ही प्रसंगी समदृष्टी होती. यावरून हे लक्षात येते की श्रीरामांमध्ये किती उच्चप्रतीची सहनशीलता व धैर्यशक्ती होती.

स्वतःला प्रभू श्रीरामांचे भक्त म्हणवून घेणाऱ्या रामभक्तांमध्ये काय इतकी उत्कट आदर्श पितृभक्ती दृष्टीस पडेल? जर आम्ही आमच्या आई-वडिलांची सेवा सुश्रूषा करीत नसू आणि त्यांना थेट वृद्धाश्रमाची वाट दाखवत असू, तर आम्हांस श्रीरामांचे नाव

घेण्याचा काय अधिकार? श्रीरामांचे जीवन हे तर मात्यापित्यांच्या भक्तीचे आदर्श उदाहरण आहे. चौदा वर्षांचा तो कठोर वनवास, हिंस्र श्वापदांनी भरलेली ती भयावह आणि कंटकाकीर्ण अशी वनयात्रा ! कंदमुळे व फळे खाऊन आणि नद्या-नाल्यांचे पाणी पिऊन पर्णकुटीतला ते राहाणे! थंडी, ऊन, वारा, पाऊस आदी सर्व कांही सहन करीत एकच कर्तव्यभावना अंगी बाळगत प्रसन्न वदनाने वनी वावरणारे ते युगपुरुष आणि त्यांची ती अर्धांगिनी सीता व सेवेत तत्पर असलेला तो लक्ष्मण हा लहान भाऊ ! तिकडे अयोध्येतील नंदीग्रामात एखाद्या तपस्व्याप्रमाणे जगत प्रजेची पुत्रवत सेवा करणारा प्रिय भरत ! आणि हे सर्व घडले आहे ते केवळ या पवित्र भारतभूमीतच! आपलेही भाग्य की इतक्या महान सर्वश्रेष्ठ मर्यादा पुरुषोत्तमाच्या पावन भूमीत जन्माला आलो. पण श्रीरामांचे चरित्र हे केवळ भारतापुरतेच किंवा तथाकथित हिंदूजनांपुरतेच मर्यादित नाही, ते तर समग्र विश्वातील प्रत्येक राष्ट्रात वसणाऱ्या मानवासाठी आहे, मग तो हिंदू असो की मुस्लीम, ईसाई असो बौद्ध , पारशी असो सिख, चिनी असो की अमेरिकी.. कोणीही असो... जो कोणी मानव आहे, त्यासाठी प्रभू श्रीराम आणि त्यांचे उज्ज्वल व्यापक जीवन !

आज केवळ भारतातच नव्हे, तर समग्र जगात अविचारांचे काहूर माजले आहे. माणसाला माणूस म्हणून ओळखले जात नाही. कुटुंबे उद्ध्वस्त होत चालली आहेत. पिता-पुत्र , माता-पुत्र, बहिण -भाऊ, गुरु- शिष्य, राजा -प्रजा, व्यक्ती- समाज, व्यक्ती - राष्ट्र हे सर्व संबंध आज नाहीसे होण्याच्या मार्गावर आहेत. माणसांच्या अंत:करणातून माणुसकी,प्रेम, दया, वात्सल्य ,करुणा, सहिष्णुता या सर्व गोष्टी नष्ट होत चालल्या आहेत. अशा या वातावरणात प्रभू श्रीरामांचे चरित्र आम्हां सर्वांचे जीवन विकसित करण्यास अमृतवल्ली ठरणारे आहे. आज खऱ्या अर्थाने गरज आहे ती श्रीरामांच्या सच्चारित्र्याचे पालन करण्याची ! नितांत आवश्यकता आहे ती या भूमंडळीच्या नक्षत्रासमान तेजस्वी महापुरुषाचे चित्र, मूर्ती किंवा प्रतिमेच्या पूजनापेक्षा त्यांचे उदात्त, व्यापक,सर्वमंगलमय असे चरित्र अंगिकारण्याची ! चला तर मग जगातील प्रत्येक मानवाचे समग्र कल्याण साधण्यासाठी आणि विश्वात शांतता प्रस्थापित करण्याच्या पवित्र उद्देशाने माणुसकीचे नवे मंदिर उभारु या ! ***

राज्यस्तरीय श्रावणी वृत्तांत..

(मागील अंकावरून..)

ई) धाराशिव जिल्ह्यात वेदप्रचार

धाराशिव जिल्ह्यातील कळंब, वाशी, घाटपिंपरी, चांदवड, अंजनसोंडा, ईट , गिरवली, मानेवाडी या ठिकाणी वेदप्रचाराचे कार्यक्रम खूपच चांगल्या प्रकारे संपन्न झाले. सभेतर्फे नियुक्त झालेले वेदप्रचारक अभिषेक शास्त्री, भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह चौहान व वाशीचे अभ्यासू प्रचारक सदाशिव भाऊ जगताप यांनी या फिरून सार्वजनिक ठिकाणी व शाळांमधून आर्य समाजाच्या विचारसरणीचा प्रचार केला.

कळंब येथे पं. अभिषेक आर्य यांनी जाजू परिवारात प्रा.सौ.सुनीता पाटील यांच्या घरी यज्ञ व उपदेश झाला. नंतर विद्याभवन हायस्कूलमध्ये श्री अभिषेकजींचे व्याख्यान पार पडले.

वाशी येथे दोन दिवस आर्य समाजात श्रावणी उपाकर्म कार्यक्रम झाला. यात सकाळी आर्य समाजात तर सायंकाळी बाळासाहेब उंदरे व अशोकराव होळकर यांच्या कुटुंबात वैदिक सत्संग पार पडले. गावातील एका शाळेत देखील व्याख्यान संपन्न झाले. कार्यक्रमासाठी संरक्षक श्री सदाशिवराव जगताप प्रधान श्री शिंदे, मंत्री श्री राजेश कवडे, कोषाध्यक्ष श्री भोसले व इतर सदस्यांनी प्रयत्न केले. त्याचबरोबर घाट पिंपरी येथे सकाळी आर्य समाजात यज्ञ पार पडला. यात सर्वश्री प्रताप सातपुते ,देविदास सातपुते, प्रकाश सातपुते, जयचंद्र सातपुते हे यजमान सपत्नीक सहभागी झाले. त्यानंतर स्थानिक न्यू हायस्कूल विद्यालयात विद्वानांची प्रवचने व कार्यक्रम पार पडले. चांदवड येथे विठ्ठल मंदिरात प्रवचन पार पडले व नंतर जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळेत कार्यक्रम झाला. ईट येथेही जिल्हा परिषद शाळेत वैदिक पंडितांनी मार्गदर्शन केले. मानेवाडी येथील शाळेतील कार्यक्रमासोबतच सार्वजनिक कार्यक्रम ही पार पडला. तर अंजनसोंडा येथे जिल्हा परिषद शाळेत प्रबोधन पर कार्यक्रम झाला.

फ) इतरांचे प्रचार कार्य

पं.राजवीरजी शास्त्रींचे प्रचारकार्य

राज्यातील मराठी विद्वान पुरोहित प्रचारक पं.श्री राजवीरजी शास्त्री यांनी अजनी, धनेगाव, विवराळ, उजेड या गावात प्रवचने दिली. ग्रामीण भागातील जनतेला सोप्या व सुगम्य भाषेत वेदज्ञानाचे महत्त्व पटवून देवून

मानवी जीवन शाश्वत सुखी व आनंदी बनविण्यासाठी वैदिक विशुद्ध ज्ञानाची कास धरावी, असे त्यांनी यावेळी सांगितले. त्यांच्यासमवेत सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांनी भजने सादर केली.

पं.कातपुरे व विज्ञानमुनिजी-

सुगाव-शिवणखेड परिसरातील वेदप्रचारक पं.श्री अशोकराव आर्य (कातपुरे) यांनी यावर्षीच्या श्रावणीला अधिक वेळ दिला. त्यांनी व विज्ञानमुनी, शिवाजी निकम यांनी वलांडी, मदनसुरी, येलमवाडी, कासार बालकुंदा, बडूर, कासारशिरसी, रामेगाव मोगरगा या गावात जावून यज्ञ, भजन, प्रवचन या माध्यमाने वेदप्रचाराचे कार्य केले.

त्याचबरोबर श्री कातपुरे हे नांदेडच्या हदगाव तालुक्यातील जरोडा, येहळेगाव, भाटेगाव, शिरुर, तळणी येथेही पोहोचले व त्यांनी तेथे वेदप्रचाराचे कार्य केले. या भागातील प्रचारक श्री पं.सोगाजी घुन्नर व भजनोपदेशिका श्रीमती पं.सुलोचनाबाई शिंदे यांनीही या प्रचारात भाग घेतला.

इचलकरंजी व कोल्हापुरात श्रावणी-

बऱ्याच वर्षानंतर यावर्षी इचलकरंजी व कोल्हापुर परिसरात श्रावणी वेदप्रचार कार्य संपन्न झाले. डॉ.नयनकुमार आचार्य यांचे प्रवचन व मार्गदर्शन पार पडले. इचलकरंजीत बाधवानी परिवाराच्या सहकार्याने आर्य समाजाची स्थापना झाली. यावेळी नवीन पदाधिकारी निवडण्यात आले. त्यानंतर हातकणंगले या गावात एका मंदिरात व एका महाविद्यालयात व्याखान पार पडले. तर कोल्हापुर येथे दयानंद-शाहू विद्यालयात विद्यार्थ्यांसमोर प्रबोधनपर व्याख्यान आणि रोहिडा परिवारात पारिवारिक सत्संग संपन्न झाला. या कार्यात श्री महेश पाटील आर्य यांची भूमिका महत्त्वाची ठरली.

गंगाखेड येथे कार्यक्रम -

गंगाखेड येथील आर्य समाजात देखील पहिल्यांदाच श्रावणी कार्यक्रम घेण्यात आला. यावेळी प्रा.अरुण चव्हाण व लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांचे मार्गदर्शन झाले. श्री रंगनाथ तिवार व गोपाल मंत्री यांनी परिश्रम घेतले.

विविध ठिकाणी प्रचार

यावर्षी सर्वश्री पं.अनिल आर्य, पं.महेश आर्य, पं.दिनेश शास्त्री, अजित शाहिर, श्रीरामजी आर्य, प्रकाशवीर आर्य, रामेश्वर राऊत, प्रा.सोमदेवजी शिंदे इत्यादींनीही विविध ठिकाणी श्रावणी निमित्त वेदप्रचार कार्य केले.

** (समाप्त) **

वार्ता विशेष

श्री नारायण कुलकर्णी यांचा सत्कार

आर्य लेखक श्री नारायणराव कुलकर्णी यांचा दि.२४ ऑगस्ट २०२३ रोजी अहमदपूर येथे सत्कार करण्यात आला. रा.स्व.संघाच्या वतीने 'हैदराबाद संग्रामातील स्वातंत्र्यसैनिकांचा व त्यांच्या वारशांचा गौरव' हा समारंभ घेण्यात आला. प्रमुख पाहुणे म्हणून भाजपाचे प्रवक्ते श्री माधव भंडारी व संपादिका सौ.पेंढारकर या उपस्थित होत्या. यावेळी आर्य लेखक श्री नारायणराव कुलकर्णी यांचा व त्यांच्या सुविद्य धर्मपत्नी सौ.सुशीलादेवी कुलकर्णी यांचा भावपूर्ण सत्कार करण्यात आला.

८१ वर्षीय श्री कुलकर्णी यांनी आजपर्यंत दहा पुस्तकांचा मराठीत अनुवाद केला आहे. श्री कुलकर्णी हे ठीक ठिकाणी पौरोहित्य व वेदप्रचाराच्या कार्यक्रमातही सहभागी होतात. त्यांचे वडील दिवंगत श्री नागोरावजी कुलकर्णी हे फार मोठे सैद्धांतिक आर्य समाजी होते. अहमदपूर तालुक्यातील चेरा या गावी आर्य समाजाच्या प्रचारासोबतच समाज परिवर्तनाच्या कार्यात देखील त्यांनी मोलाचे योगदान दिले होते.

परळीत 'ऋषिनिर्वाण' दिन साजरा

'महर्षी दयानंद हे मानवी मूल्यांचे प्रसारक होते. त्यांनी वेदांचे सखोल अध्ययन करून प्रचलित संकुचित विचारांना तिलांजली देत विशुद्ध स्वरूपातील वैदिक मानवतावाद प्रतिपादित केला', असे विचार लातूर येथील वैदिक विद्वान प्रा. सोमदेव शास्त्री (शिंदे) यांनी मांडले. परळी आर्य समाजात महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या १४० व्या निर्वाण दिनानिमित्त आयोजित विशेष कार्यक्रमात ते प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी संस्थेचे कोषाध्यक्ष श्री देविदासराव कावरे हे होते. कार्यक्रमाच्या प्रारंभी प्रा. अभय तिवार व प्रा. डॉ. वीरश्री शास्त्री यांनी महर्षी दयानंदांवर आधारित भजन सादर केले. आरव भारती यांने श्लोक गायन केले. पाहुण्यांचा परिचय श्री दयानंद भारती यांनी करून दिला ,तर सूत्रसंचालन प्रा.डा. नयनकुमार आचार्य यांनी केले. आभार श्री जयपालहोटी यांनी मानले. कार्यक्रमाच्या अगोदर पं. लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांच्याबरोबर पौरोहित्याखाली विशेष यज्ञ संपन्न झाला.

कोल्हापूर परिसरात संस्कार शिबिर संपन्न

नव्या पिढीला वैदिक विचार, संस्कार व आर्य समाजाचा परिचय व्हावा, या उद्देशाने १९ व २० नोव्हेंबर रोजी कोल्हापूर परिसरातील आळते (ता.हातकणंगले) येथे द्विदिवसीय वैदिक संस्कार शिबिर संपन्न झाले. आर्य समाज कोल्हापूर व राजर्षी शाहू वैदिक विचार मंच यांच्या संयुक्त विद्यमाने हे शिबिर प्रथमच पार पडले. आळते गावापासून जवळच उंच टेकडीवर असलेल्या रामलिंग मठ मंदिरात पार पडलेल्या या शिबिरात जवळपास ३५ प्रशिक्षणार्थी सहभागी झाले होते. सकाळी विशेष बृहद् यज्ञ, दुपारी व रात्री भजनोपदेशक, प्रवचन असे कार्यक्रम पार पडले. पं.श्री प्रतापसिंहजी चौहान यांनी भजने सादर केली. मुख्य वक्ते म्हणून डॉ.श्री नयनकुमार आचार्य, श्री तुकाराम चिंचणीकर यांचे मार्गदर्शन लाभले. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन श्री महेश पाटील (आर्य) यांनी केले. तर व्यवस्थापन संयोजक श्री प्रवीण माळवदे, प्रमोद चिंचुरे ,चंद्रशेखर सरकाळे, प्रवीण जाधव व दयानंद मोरे यांनी केले. या शिबिरासाठी राहुल चिनगे, अमोल साळुंखे ,अभिजीत पाटील ,पवन भोसले, आनंद सूर्यवंशी, विलास खोत, योगेश सुरणकर आदींचे सहकार्य लाभले.

गुंजोटीत वेदप्रकाश बलिदान साजरा

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील पहिले आर्य बलिदानी पं.वेद प्रकाश यांच्या क्रांतिकारी हौतात्म्यामुळे हा संग्राम यशस्वी ठरला. त्यांचे बलिदान व्यर्थ जाणार नाही, असे प्रतिपादन वैदिक विद्वान पं. प्रियदत्तजी शास्त्री यांनी केले.

गुंजोटी येथे नुकताच १४,१५,१६ डिसेंबर २०२३ रोजी हुतात्मा पं. वेदप्रकाश महोत्सव साजरा करण्यात आला. यावेळी गुंजोटी गावचे भूमिपुत्र व आर्य लेखक श्री पंडित रमेशजी ठाकूर यांचा सत्कार करण्यात आला. यावेळी पं. राजवीरजी शास्त्री यांनीही विचार मांडले. व्यासपीठावर श्री विज्ञानमुनी व इतर मान्यवर उपस्थित होते. सकाळी व संध्याकाळी झालेल्या यज्ञाचे पौरोहित्य पं.राजवीरजी शास्त्री यांनी केले. शेवटच्या दिवशी गावातून भव्य अशी शोभायात्रा काढण्यात आली. कार्यक्रमाला सफल करण्यासाठी श्री महाळाप्पा दुधभाते , विश्वनाथ कदेरे, विष्णू खंडागळे आदींनी प्रयत्न केले.

परळीत चार यशवंतांचा सत्कार

परळीतील आर्य परिवारातील चार मुलामुलींनी शिक्षण क्षेत्रात उत्तम यश संपादन केल्याबद्दल त्यांचा श्रावणी पर्वाच्या समापनदिनी आमंत्रित विद्वानांच्या शुभहस्ते सत्कार करण्यात आला.

यात दिलीप दिक्षित यांची कन्या कु.प्रेरणा दीक्षित हिने समाजशास्त्र विषयात डॉ.बा.आं. मराठवाडा विद्यापीठाची पीएच.डी. पदवी मिळाल्याबद्दल दिवंगत रामपालजी लोहिया यांची नात व श्री प्रेमचंदजी लोहिया यांची कन्या कु.वैष्णवी हिने उदयपुरच्या महर्षी विद्यापीठातून वास्तूशास्त्र विषयात पीएच.डी. मिळविल्याबद्दल पू.डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांचे नातू व डॉ.मधुसूदन काळे यांचे सुपुत्र डॉ.आदित्य काळे याने नागपुरच्या एन.के.पी.साळवे वैद्यकीय महाविद्यालयातून अस्थिरोग चिकित्सा विषयात एम.एस. ही पदवी प्रथम प्राविण्यासह उत्तीर्ण केल्याबद्दल, तर प्रा.डॉ.वीरेंद्र शास्त्री यांचे सुपुत्र चि.सोमेंद्र याने जयपुर(राज.) येथे झालेल्या योगा स्पर्धेत १ तास ४५ मिनिटांपर्यंत योगासन प्रदर्शन करुन इन्फ्लुएंजर वर्ल्ड बुक मध्ये विक्रम स्थापन केल्याबद्दल शाल, पुष्प भेट देऊन सत्कार करण्यात आला. वैदिक आचार्य सानंदजी व प्रा.सोनेरावजी आचार्य यांनी हा सत्कार केला.

शोकवार्ता अजितकुमार सरसंबे यांना बंधुशोक

आर्य समाज उदगीरचे ज्येष्ठ कार्यकर्ते व माजी कोषाध्यक्ष श्री अजितकुमारजी सरसंबे यांचे लहान भाऊ श्री वीरकुमारजी मल्लाप्पा सरसंबे यांचे दि.२३ डिसेंबर २०२३ रोजी वयाच्या ७८ व्या वर्षी प्रदीर्घ आजाराने दुःखद निधन झाले.

त्यांच्यामागे मुलगा, सून व नातवंडे असा परिवार आहे. दुर्दैवाने दीड वर्षांपूर्वी त्यांच्या पत्नीचेही दुःखद निधन झाले होते. दिवंगत श्री सरसंबे हे आर्य समाज उदगीरचे सदस्य होते. हैदराबाद येथील एचएमटी कंपनीत ते यांत्रिकी पदावर कार्यरत होते. सरळ ,सौम्य व शांत स्वभावाचे श्री वीरकुमारजी हे गेल्या दहा वर्षापासून आजारी होते.

त्यांच्या पार्थिवावर दुपारी २ वाजता वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. दिवंगत आत्म्यास भावपूर्ण श्रद्धांजली !!

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४१,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेंट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

पिम्परी पुणे आर्य समाज में वार्षिकोत्सव पर आर्यविदुषी अंजली आर्या का मार्गदर्शन।

'वैदिक व्याख्यानमाला' अभियानांतर्गत परली के न्यू हायस्कूल में मार्गदर्शन करते हुए वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री ओमप्रकाशजी (वाराणसी)।

औराद शहाजानी के विद्यालय में छात्रों को सम्बोधित करते हुए श्री ओमप्रकाशजी।

भारत के व्यंजनों का आधार है,
एम.डी.एच.मसालों से प्यार है....

MDH

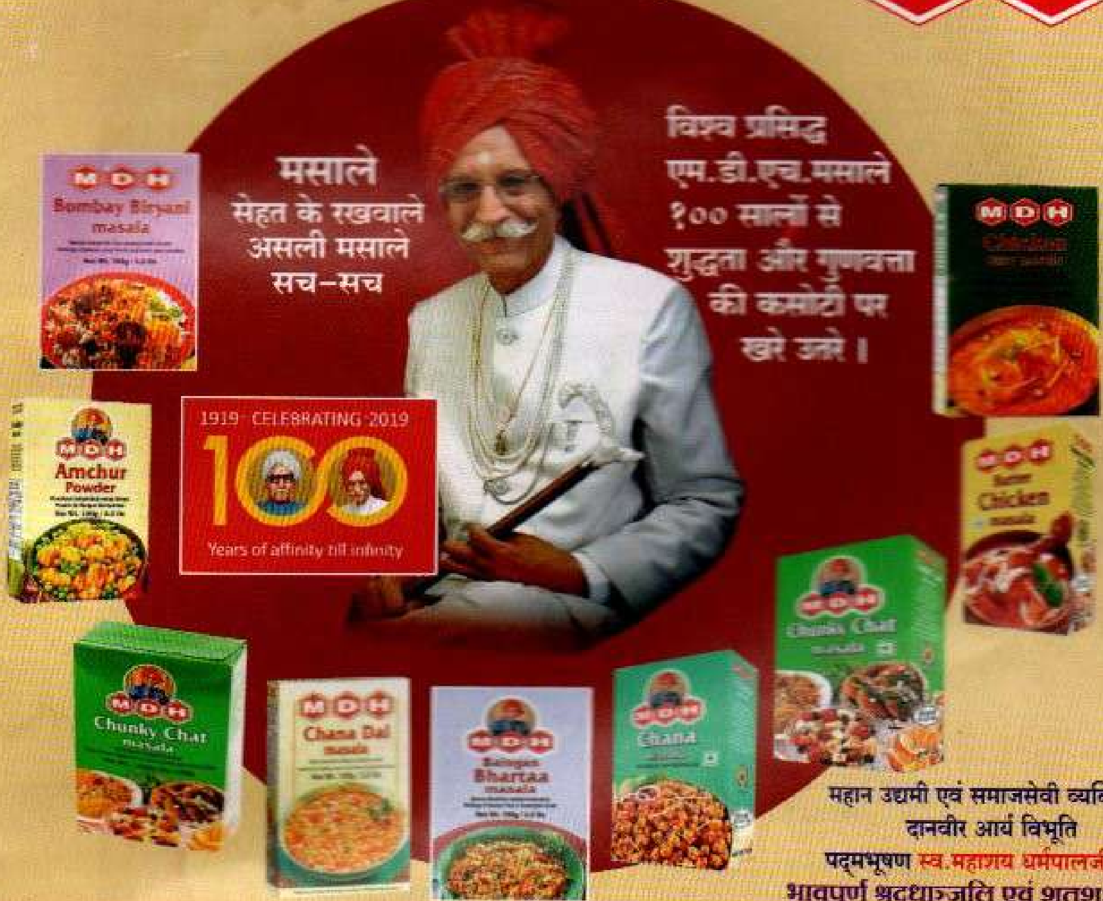

महान उद्यमी एवं समाजसेवी व्यक्तित्त्व,
दानवीर आर्य विभूति
पद्मभूषण स्व.महाशय धर्मपालजी आर्य
भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि एवं शतशः वन्दन !

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा.) लिमिटेड
९/४४, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-११००१५ फोन नं.०११-४१४२५१०६-०७-०८
E-mail:mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

REG.No.MAHBIL/2007/7493*
*Postal No.L/108/RNP/Beed/2021-2023

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया ।

मातृ देवो भव !

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि !

॥ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम अनुयायी, वैदिक सिद्धान्तों के अध्येता
दानशूर आर्य कार्यकर्ता श्री समाधान लक्ष्मीकांतजी पाटिल
व सौ. कविता समाधान पाटिल
मु. पो. सावखेडा (खुर्द) ता. जि. जलगांव एवं पाटिल परिवार
की ओर से अपनी पूजनीया दादीमाँ
स्व. श्रीमती गुंढरबाई किशनरावजी पाटिल
इनकी पावन स्मृति में
वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट